भा.वा.अ.शि.प.-हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा #AKAM के अंतर्गत 'अंतर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस' 21 मार्च, 2023 को आयोजित कार्यक्रम पर रिपोर्ट

Report on celebration of International Day of Forests program on 21 th March, 2023 under #AKAM at ICFRE-HFRI

भा०वा०अ०शि०प०-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा AKAM के अंतर्गत दिनांक 21 मार्च 2023 को 'अंतर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस' का आयोजन किया गया । डॉ. विनीत जिश्टु, वैज्ञानिक-ई, ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक, डॉ. संदीप शर्मा, आमंत्रित मुख्य वक्ता/मुख्यातिथि श्री नेक राम शर्मा (पदम श्री), अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों शोधार्थियों तथा औक्लैंड स्कूल से आये हुये 85 विद्यार्थी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रुप रेखा प्रस्तुत की तथा 'अंतर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस' के महत्व पर प्रकाश डाला ।

निदेशक महोदय, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने कहा कि हम सभी बहुत खुशकिस्मत है कि आज हमें श्री नेक राम शर्मा, पदम श्री से मोटे अनाज़ के बारे में उनके अनुभव सुनने को मिलेगे । उन्होंने अंतराष्ट्रीय वानिकी दिवस पर वनो के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों पर विस्तृत रूप में व्याख्यान दिया, जलवायु परिवर्तन पर चिंता जताई और साथ में विद्यार्थी एवं अन्य सभी प्रतिभागियों को पौधरोपण और वनो के संरक्षण के लिए प्रेरित किया । संस्थान से वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विस्तार प्रभाग प्रमुख, डॉ. जगदीश सिंह ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और वनों के संरक्षण में दिये गए योगदान के बारे में बताया ।

इसके उपरांत मुख्य वक्ता श्री नेक राम शर्मा ने 'अंतर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस-2023' की थीम "Forests and Health" पर विस्तृत जानकारी प्रदान दी । पदम श्री पुरस्कार विजेता और **हिमाचल के मिलेट मैन** के नाम से प्रसिद्ध श्री नेक राम शर्मा ने छात्र - प्रतिभागियों एवं समस्त कर्मचारियों से श्री अन्न (मिलेट्स) को आहार का हिस्सा बनाने में अग्रणी भूमिका निभाने का आग्रह किया । नेक राम जी ने कहा कि भारतीय संत और गाँव के लोग इन सुपर फूड्स के बारे में जानते थे और इनलिए साल भर में 18 प्रकार के अनाज़ उगाकर मिश्रित आहार खाते थे । इस अवसर पर औक्लैंड स्कूल के छात्रों ने "पेड़ों का संरक्षण" नामक एक छोटी सी नाटक की प्रस्तुति दी । श्री नेक राम शर्मा ने वैज्ञानिकों के साथ विचार सांझा करते हुए पारंपरिक कृषि वानिकी पद्धति में मोटे अनाज के फसलों को शामिल करने का आग्रह किया । यह कार्यक्रम वन्य प्राणी विंग हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया ।

कार्यक्रम की झलकियां

INTERNATIONAL
DAY OF

INTERNATIONAL
DAY OF
RESTS
21 MARCH

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

Forest Research Institute, Shimla

DAY OF
FORESTS

NTERNATIONAL
DAY OF
21 MARCH

****